68

दफ़नाया जाना

(27:57-66)

अरिमतियाह के यूसुफ ने पिलातुस से यीशु की लाश को दफ़नाने की अनुमति लेकर उसे अपनी ही नई कब्र में रख दिया (27:57-61)। अगले दिन जो कि उच्च सब्त का दिन था पिलातुस ने यहूदी अगुओं को कब्र पर पहरा बिठाने की अनुमति दे दी। वे चेलों को यीशु की देह को चुराकर ऐसा कोई दावा करने से रोकना चाहते थे कि वे मुर्दों में से जी उठा है (27:62-66)।

मसीह की देह का दफ़नाया जाना (27:57-61)

[57]जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया: उस ने पिलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। [58]इस पर पिलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। [59]यूसुफ ने लोथ को लेकर उसे उज्वल चादर में लपेटा। [60]और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया। [61]और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कब्र के साम्हने बैठी थीं।

यूहन्ना रचित सुसमाचार संकेत देता है कि सब्त का दिन आ रहा था जिस कारण यहूदी अगुओं ने यीशु और उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो जनों की टांगे तोड़ने की पिलातुस से विनती की ताकि वे जल्दी मर सकें (यूहन्ना 19:31)। टूटी हुई टांगों के साथ उन्होंने सांस लेने के लिए अपने आपको ऊपर नहीं उठा पाना था जिससे अन्ततः उनका दम घुट जाना था। सिपाहियों ने दोनों डाकुओं की हड्डियां तोड़ डालीं परन्तु यह देखकर कि यीशु तो मर चुका है, उन्होंने उसकी टांगें न तोड़ीं। इससे भजन संहिता 34:20 की भविष्यवाणी पूरी हुई कि "उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी" (यूहन्ना 19:36)। एक सिपाही ने यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह मर चुका है उसकी पसली में भाला मारा, तो "तुरन्त लोहू और पानी निकला" (यूहन्ना 19:34)।

शुक्रवार का दिन होने के कारण यह सब्त की "तैयारी का दिन" था। यहूदी लोग रात भर लाशों को क्रूसों के ऊपर नहीं रहने देना चाहते थे (यूहन्ना 19:31)। व्यवस्था में कहा गया था कि वृक्ष पर लटकाए गए किसी भी व्यक्ति को उतारकर सूर्यास्त से पहले पहले दफ़नाया जाना आवश्यक है (व्यवस्थाविवरण 21:22, 23)। यीशु की मृत्यु 3:00 बजे सायं हो गई। क्योंकि सब्त का आरम्भ 6:00 सायं होता था इस कारण यहूदी लोग लाशों को क्रूसों के ऊपर से उतारने की कोशिश कर रहे थे।[1]

"तैयारी का दिन" (*paraskeuē*) "शुक्रवार" के लिए एक तकनीकी शब्द था और इसे यूनानी भाषा में भी वैसे ही रहने दिया गया है। यह सब्त भी उच्च पवित्र दिन था क्योंकि यह फसह

के दिन वाला सब्त था (यूहन्ना 19:31)। सब्त की जल्दबाजी के कारण यीशु के चेले उसकी देह को दफ़नाने के लिए सही ढंग से अभिषेक भी नहीं कर पाए जैसा कि परम्परागत रूप से किया जाता था। इसी कारण रविवार की सुबह स्त्रियां कब्र पर जा रही थीं (लूका 23:55-24:1)।

आयत 57. यूसुफ़ मूल में **अरिमतियाह** नामक यहूदिया के एक नगर का रहने वाला था। यह शमूएल के नगर रामा (या रामातैमसोपीम) जैसा हो सकता है (1 शमूएल 1:1, 19, 20)। आज इसे "रैंटिस" नगर कहा जाता है।

यूसुफ महासभा का "प्रमुख सदस्य" था (मरकुस 15:43; लूका 23:50), स्पष्टतया ऐसा व्यक्ति जिसकी सलाह आम तौर पर मांगी जाती और मानी जाती थी। परन्तु उसने यीशु के प्रति यहूदियों की कार्यवाही पर सहमति नहीं दी (लूका 23:51)। यह **धनी मनुष्य** राज्य के आने की राह देख रहा था (मरकुस 15:43)। यहां पर वह **यीशु का** एक गुप्त **चेला** था (यूहन्ना 19:38; देखें 12:42), परन्तु अब उसने उसके साथ अपने सम्बन्ध को जगज़ाहिर कर दिया। दिलचस्प बात है कि "क्रूसारोहरण जिससे यीशु के अधिकतर चेले छुप गए थे यूसुफ के ऊपर उसका उलट असर हुआ था और वह खुलेआम उसे मानने लगा था।"[23]

आयत 58. यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था जिस कारण उसकी लाश को दफ़नाने की अनुमति रोमी अधिकारियों से लेनी आवश्यक थी। किसी को उम्मीद होगी कि यीशु के परिवार का कोई सदस्य या उसके प्रेरितों में से कोई उसकी लाश मांगेगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ।

परछाइयों में से बाहर आते हुए यूसुफ "हियाव करके" (मरकुस 15:43) **पिलातुस से यीशु की लोथ** मांगने गया ताकि वह उसे दफ़ना सके। हाकिम को इस बात से आश्चर्य हुआ कि यीशु पहले ही मर चुका था, सो उसने यह पक्का करने के लिए कि यह बात सच है, सूबेदार को बुलाया (मरकुस 15:44)। यह सुनिश्चित हो जाने के बाद कि यीशु मर चुका है उसकी लाश यूसुफ को दे दी गई (मरकुस 15:45)।

आयत 59. लोथ को क्रूस पर से उतारकर **यूसुफ ने इसे उज्वल चादर में लपेटा** (मरकुस 15:46; लूका 23:53)। यह बाहरी वस्त्र या कफ़न हो सकता है। यूहन्ना यीशु के दफ़नाए जाने के ढंग को बड़े विस्तार से बताता है। उसकी लाश को "यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार सुगंध द्रव के साथ कफ़न में पलेटा" (यूहन्ना 19:40)। मलहम में डुबोकर कपड़े की पट्टियों का इस्तेमाल करने हुए यहूदी लोग लाश को पूरी तरह ढकने तक मिस्रियों की तरह ही मुर्दे को लपेटते थे।[3] लाज़र "कफ़न से हाथ पांव बंधे हुए और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ" कब्र से निकलकर आया था (यूहन्ना 11:44)।

यूसुफ ने यीशु को स्वयं नहीं दफ़नाया था। उसके साथ यहूदियों का एक और अधिकारी निकुदेमुस था जो रात के समय यीशु को मिलने आया था (यूहन्ना 3:1-21)। यूहन्ना 7:50, 51 के अनुसार महासभा का सदस्य होने के रूप में उसने निष्पक्ष मुकदमे के यीशु के अधिकार की रक्षा की थी। उस समय उस पर मसीह का चेला होने का आरोप लगाया गया था। वह यीशु का गुप्त चेला रहा था परन्तु अब वह गुप्त नहीं था। उसने यीशु के दफ़नाने के लिए पचास सेर के लगभग गंधरस और एलवा यीशु के दफ़नाने के लिए दिया (यूहन्ना 19:39)।

आयत 60. यीशु की लाश तैयार हो जाने के बाद यूसुफ ने **उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई थी,** यह तथ्य हर तरह से चौंकाने वाला है। (1) यूसुफ का

दयालुता भरा कार्य वास्तव में एक बड़ा बलिदान था। उसने ऐसी चीज़ का त्याग किया, जो उसने अपने लिए बनाई थी। यह भी हो सकता है कि यीशु को एक अपराधी के रूप में दण्ड दिया गया था इस कारण यहूदी लोगों ने उसके साथ उसी कब्र में किसी दूसरे को दफ़नाने की अनुमति नहीं देनी थी। शायद यूसुफ को एक और कब्र खरीदनी पड़नी थी। (2) दण्ड पाए हुए अपराधियों को विशेषकर आदर योग ढंग से दफ़नाया जाना नहीं मिलता था। बिना इस्तेमाल हुई कब्र में दफ़नाया जाना (यूहन्ना 19:41)[4] जो महासभा के किसी सदस्य की हो अभी अभी क्रूस पर चढ़ाए व्यक्ति के लिए बहुत ही बड़ा सम्मान था! (3) यीशु का दफ़नाया जाना भविष्यवाणी का पूरा होना था। यह तथ्य कि यह कब्र चट्टान ''काटकर बनाई गई'' थी स्वाभाविक गुफ़ा होने की बात के उलट इस ''धनी मनुष्य'' के खर्च की पुष्टि करता है (27:57)। दुखी सेवक के सम्बन्ध में यशायाह ने भविष्यवाणी की थी, ''उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ'' (यशायाह 53:9)।

यीशु की लाश सुरक्षित ढंग से **कब्र** में रख देने के बाद यूसुफ ने **कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का** दिया। उस काल की कुछ कब्रों की तरह इसमें भी रास्ता बना होगा जिसमें पत्थर को लुढ़काया जा सकता था।[5] पत्थर बड़ा और भारी था, जिस कारण जी उठने की सुबह यीशु की लाश का अभिषेक करने के लिए आई स्त्रियां हैरान थीं कि उनके लिए इसे कौन हटाएगा (मरकुस 16:3, 4)। ऐसे पत्थर कब्रों के लुटेरों को रोकने का काम करते थे और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि वे जंगली जानवरों को लाश को खाने से रोकते थे। यीशु की कब्र का द्वार नीचे को था; क्योंकि जब यह खाली थी तो पतरस और यूहन्ना को अन्दर देखने के लिए झुकना पड़ा था (यूहन्ना 20:5)। यह उस समय बनाई जाने वाली कब्रों के ढंग से मेल खाता था।

यीशु की कब्र उसी इलाके में जहां क्रूसारोहरण हुआ था, एक बाग में थी (यूहन्ना 19:41)। आज यरूशलेम जाने वालों को इस कब्र के दो परम्परागत स्थान दिखाए जाते हैं (27:33 पर टिप्पणियां देखें)। पहला स्थान चर्च ऑफ़ होली स्पल्कर के अंदर गुलगुता के साथ है। इस कब्र के पीछे जिसे इसकी मूल अवस्था में नहीं रखा गया है, की परम्परा कान्स्टैंटाइन और उसकी माता हेलेना के समय तक की है (चौथी शताब्दी में)। कुछ लोगों का मानना है कि यह वास्तव में यीशु की कब्र वाला स्थान हो सकता है।

दूसरा स्थान बाग वाली कब्र है जो गोर्डन की कल्वरी से अधिक दूर नहीं है। परन्तु यह परम्परा 19वीं शताब्दी से आरम्भ हुई बताई जाती है। कब्र में पत्थर को लुढ़काने के लिए एक रास्ता अवश्य है, जैसा कि यीशु की कब्र में होगा, परन्तु पुरातत्ववेताओं को इस कब्र के आठवीं या सातवीं शताब्दी ई.पू. तक के होने की और विशेषताएं मिलती हैं। यह बहुत ही संदेह भरा है कि यह वही कब्र थी जहां मसीह को दफ़नाया गया था।

आयत 61. मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम और (याकूब और यूसुफ की माता) यूसुफ और निकुदेमुस के पीछे पीछे कब्र तक गईं। ''उन स्त्रियों जो उसके साथ गलील से आई थीं'' के लूका के सामान्य हवाले (लूका 23:55) का अर्थ हो सकता है कि सलोमी भी वहां थी (27:56 पर टिप्पणियां देखें)। यह स्त्रियां **कब्र के सामने बैठी थीं**। दफ़नाए जाने को देखने के बाद वे वहां चली गईं जहां पर्व के दौरान ठहरी हुई थीं। सब्त बीत जाने के बाद उन्होंने यीशु की लाश पर लगाने के लिए मसाले तैयार किए (मरकुस 16:1; लूका 23:56)।

पिलातुस की निषेधात्मक आज्ञा (27:62-66)

[62]दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा। [63]हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमाने वाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। [64]सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा: तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। [65]पिलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरुए तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। [66]सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की।

आयतें 62, 63. तैयारी के दिन के बाद का दिन सब्त या शनिवार का दिन था। इस अवसर पर महायाजकों और फरीसियों ने पिलातुस को उस भविष्यवाणी के बारे में बताने के लिए जो यीशु ने की थी, ''मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा,'' जिसे उन्होंने भरमाने वाला कहा था। उससे मुलाकात की। यीशु ने अपने चेलों को अकेले में बताया था कि अपने दुख उठाने और मृत्यु के बाद वह तीसरे दिन जी उठेगा (16:21; 17:9, 22, 23; 20:18, 19)। अन्य समयों पर उसने यहूदी अगुओं और लोगों से ऐसी ही बातें कही थीं। शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा चिह्न मांगने पर यीशु ने उनसे कहा था कि उन्हें दिया जाने वाला चिह्न केवल योना का चिह्न होना था। जिस प्रकार से वह नबी तीन दिन और रात समुद्री जन्तु के अन्दर रहा था, वैसे ही यीशु ने उतनी ही देर पृथ्वी के अन्दर रहना था (12:40)। अपनी देह की बात करते हुए उसने कहा था, ''इस मन्दिर को ढा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा'' (यूहन्ना 2:19)। इस बात के अर्थ को पहले उन्होंने चाहे न जानने का दिखावा किया था (26:61; 27:40) परन्तु यहां पर उन्हें पूरी तरह से समझ थी कि वह अपनी ही देह और अपने ही मुर्दों में से जी उठने की बात कर रहा था।

आयत 64. इसी भविष्यवाणी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने उसके चेलों को उसकी देह को चुराकर ये बताने से रोकने के लिए कि वह जी उठा है तीसरे दिन तक पहरेदार बिठाने के लिए कहा। उन्होंने यह कहते हुए अपनी बात पूरी की, ''तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा।''[6] उनके सोचने के ढंग के अनुसार यीशु के मसीहा होने का दावा पहला धोखा और यह कहना कि वह मुर्दों में से जी उठा है दूसरा धोखा होना था। याद रखा जाना चाहिए कि महायाजक सदूकियों में से होते थे और यहूदियों का यह दल जी उठने में विश्वास नहीं रखता था (22:23; प्रेरितों 23:8)।

यहूदी अगुओं की मुख्य चिन्ता अनावश्यक थी क्योंकि चेलों को विश्वास नहीं था कि यीशु जी उठेगा (देखें मरकुस 9:10, 32; यूहन्ना 20:9)। उन्हें मरियम मगदलीनी के यह बताने के बाद भी कि वह जी उठा है, विश्वास नहीं हुआ था (मरकुस 16:11, 14)। यहूदियों को लगा कि यीशु के जी उठने की बात उनके लिए उसकी शिक्षाओं से भी बड़ा खतरा होनी थी, यदि यह खबर गलत भी होती।

आयत 65. पिलातुस उनकी इच्छाओं के आगे हार मान गया और उसने उन्हें कब्र पर पहरा बिठाने के लिए पहरुओं को उन्हें दे दिया। ये लोग रोमी सिपाही थे न कि यहूदी मन्दिर

के पहरेदार जो इस बात से 28:11-15 में बाद के नोट्स से भी स्पष्ट है कि यहूदी अगुओं ने पिलातुस से उनकी मांग की थी । यूनानी शब्द (*koustōdia*) जिसका अनुवाद ''पहरुए'' हुआ है वास्तव में लातीनी भाषा के शब्द *custodia* का लिप्यंतरण है। अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''कस्टडी'' और ''कस्टोडियन'' इसी शब्द से लिए गए हैं।

आयत 66. प्रधान याजकों और फरीसियों के लिए कहा गया है कि उन्होंने जाकर पिलातुस की आज्ञा के अनुसार **पत्थर पर मोहर लगाकर कब्र की रखवाली की**। उन्होंने कब्र के बाहर रोमी पहरुओं को बिठाया और पत्थर पर मोहर लगा दी। इसमें पत्थर के आर पार और कब्र के दोनों और के सामने जुड़ी रस्सी होगी। रस्सी पर मोम या मिट्टी लगाई गई होगी जिसके ऊपर सरकारी रोमी छाप वाली अंगूठी से मोहर लगाई गई थी। ऐसी मोहर में किसी के लिए भी जो कब्र के साथ छेड़छाड़ करे, मृत्यु की धमकी दी गई होती थी।

जो बात पिलातुस और यहूदियों को समझ नहीं आई वह यह थी कि कब्र पर कोई पहरेदार, कोई रखवाली यीशु को जी उठने से रोक नहीं सकती थी! जैसा कि उन्होंने सोचा था कि झूठी अफ़वाहों को फैलने से रोकते हुए, कब्र की रखवाली करने से वास्तव में जी उठने की सच्चाई को प्रमाणित ही किया गया।

टिप्पणियां

[1]देखें जोसेफस *वार्स* 4.5.2; मिशनाह *शब्बथ* 23.4-5. [2]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 728. [3]टेसिटुस *हिस्ट्रीस* 5.5. [4]जैसा कि आर. टी. फ्रांस ने लिखा है, '' *नई* कब्र हाल ही में बनी कब्र जितनी नहीं है, जैसी यह जो अभी इस्तेमाल नहीं हुई, यानी इसके किसी आले पर कब्जा नहीं हुआ'' (आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985], 403; 8:21; 26:3 पर टिप्पणियां देखें)। [5]कब्रों के पत्थर को लुढ़काने पर अतिरिक्त जानकारी के लिए, *जॉंडरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉंडरवन, 2002), 496 में देखें मार्क स्ट्रॉस, ''लूक।'' [6]''पिछला पहले से भी बुरा होगा'' कहावत के रूप में कही जाने वाली बात थी (देखें 12:45; 2 पतरस 2:20)।